

News

www.amaltascollege.com

SPIC MACAY Presentation | Kalbeliya Dance



Kalbeliya dances, associated with a Rajasthani tribe of the same name, are an expression of the Kalbelia community's traditional way of life. Kalbeliya tribe people who were once professional snake handlers, today evoke their former occupation in music and dance that is evolving in new and creative ways.

On 11-Jan-2023, SPIC MACAY (Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture amongst Youth) in collaboration with Amaltas Niketan School, Tilothu, organised 'Rhythms of Rajasthan' in our college auditorium. The Chairman of the college Sri Ranjit Sinha, Vice-Chairperson Smt. Ranjana Sinha, Principal Dr. Uday Narayan Singh, faculty and students from Amaltas Niketan and our college were present for the event.

The high-energy rendition of Rajasthani folk songs and vibrant Kalbeliya dance performances by the very versatile Sri Bhungar Kha Manganiyar and his troupe recreated the Rajasthani spirit in all vigor and enthralled all. A unique aspect of the Kalbelia dance is that it is only performed by women while the men play the instruments and provide the music. The troupe comprised Saddam Kha, Umar Kha, Mahendra Kha, Kasim Kha and Aarti Sapera.

SPIC MACAY is a non-profit student movement to enrich the quality of formal education through increasing awareness about Indian art and culture. This event was a major step towards a long-term collaborative partnership with SPIC MACAY and Amaltas Niketan in enhancing the quality of education by increasing appreciation of the different aspects of Indian

74th Republic Day Celebration



Dr. Rajendra Prasad | Birth Anniversary

The 138th birth anniversary of our first President Dr. Rajendra Prasad was celebrated on 3rd December 2022 in the college.

Assistant Professors Sri Jagmohan Choudhary, Sri Praween Singh Kushwaha and Ms. Lovely Saw spoke about his struggles and contributions and motivated the student-teachers to build the resilience to face every challenge in their personal and professional lives.

A documentary from the Doordarshan archives on the life of Dr. Rajendra Prasad was also shown to commemorate the occasion.



भारतीय भाषा दिवस

सोमवार दिनांक 12 दिसंबर 2022 को भारतीय भाषा दिवस चिन्नास्वामी सुब्रमण्यम भारती के जयंती के शुभ अवसर पर अमलतास कॉलेज ऑफ एजुकेशन में आयोजित की गई। भारत के अधिकांश भाषाओं में कार्यक्रम की प्रस्तित शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा दी गई।

कार्यक्रम की शुरुआत संस्कृत भाषा में दीप प्रज्वलन-मंत्रोच्चारण के साथ किया गया । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रणजीत सिन्हा ने 'बहुभाषा' का व्यक्ति के जीवन में महत्व पर प्रकाश डाला। इसके साथ ही हिंदी भाषा के विद्वान शिक्षक श्री श्याम लाल पांडे ने भारतीय भाषा दिवस के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। इसके अलावा हिंदी, मैथिली, भोजपुरी, मगही, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, पंजाबी, अंग्रेजी इत्यादि भाषाओं में प्रशिक्षणार्थियों ने अपनी अपनी प्रस्तुति दी।

इस मौके पर संस्थान के ही सहायक प्राध्यापक श्री शशि कुमार शेखर ने प्रशिक्षुओं को अपने संबोधन में कहा कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था भारतीयता के जड़ों में तब तक नहीं हो सकती जब तक उसे भारतीय भाषाओं के साथ न जोडा जाये । कार्यक्रम का समापन विभिन्न प्रशिक्षणार्थियों द्वारा 18 भाषाओं में नमस्कार के साथ किया गया।







Reimagining Future Together I Young Educators in India

Education is central to development and to make life better for young minds around the world. Education is important in eradicating poverty and hunger, achieving inclusive and equitable economic growth and sustainable development. Continuous development in education has increased its affordability, accessibility and quality.

The ancient Gurukul educational system in India was founded on the idea that education should be a complete immersion in both theoretical and practical learning. Students were given an adaptive and personalised education through the residential system of education, which put an emphasis on skill development. It featured components for spiritual, mental, and emotional growth and welfare, resulting in young people who were prepared to face life's





problems. However, when colonialism spread over India, the educational system changed into one that was more theoretical and regimented, keeping students confined to the classroom with little emphasis on the practical application of what was taught.

Fortunately, things have now begun to change and once again educators have realised the value of linking knowledge with its practical application. Our teachers do more than merely impart knowledge to their students. They are expected to be caring and friendly, and they also serve as sounding boards for a wide range of ideas and aspirations of their students. This is particularly true for young instructors, who are always viewed as the ideal adult by teenagers. Further, I can say that inclusive teaching techniques become much more enhanced and communicative when a

young teacher is imparting knowledge to the students since, he or she knows the current trends and is also able to establish an emotional connect with the students.

However, even while teaching is considered one of the most honourable professions, today not many young people want to become teachers. One of the reasons for this is that they see their peers choose careers that pay far more, leading to a better lifestyle. But what is also true is that those who do choose to become teachers are often people who have been inspired by either their own teachers or by their parents who have been diligent and passionate about their profession. As someone said, "My mother is a teacher, and every day as I was growing up, I would see her arrive home smiling and happy with the work she did teaching young children at a nearby school". That greatly influenced me. Also, there is no better way to learn than to teach."

- Lovely Saw (Assistant Professor)

www.amaltascollege.com

पराक्रम दिवस - नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती

सभाष चन्द्र बोस की 126 वीं जयंती के उपलक्ष्य में सोमवार, 23 जनवरी 2023 को अमलतास कॉलेज ऑफ़ एज़्केशन में पराक्रम दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य पर आजाद हिन्द फ़ौज के झाँसी रेजिमेंट में तैनात लेफ्टनेंट श्रीमती भारती आशा सहाय चौधरी के विचारों एवं अनभवों को नाटक के माध्यम से बी.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षओं ने प्रस्तत किया। नाटक का निर्देशन सहायक प्राध्यापक श्री रोशन कमार द्वारा किया गया। इस मौके पर भारती आशा सहाय चौधरी जी के पत्र श्री संजय चौधरी, संस्थान की सचिव श्रीमती रत्ना चौधरी, अध्यक्ष श्री रणजीत सिन्हा, विशिष्ट अतिथि श्रीमती रंजना चौधरी तथा श्री आनंद चौधरी मौजद रहे।

इस मौके पर संस्थान के अध्यक्ष श्री रणजीत सिन्हा जी ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस एवं उनके सहयोगियों को नमन किया जिनके द्वारा हमारी संस्कृत एवं सनातन विचारों को इस कालखंड में स्थापित किया गया है और जिनसे प्रेरित होकर हम भारत माता की सेवा करते हए कालांतर में पनः राष्ट्र को 'नए भारत' की दिशा में ले जाने का स्वप्न साकार कर रहे हैं । महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक श्री शशि कुमार शेखर ने सभा को संबोधित करते हुए लेफ्टनेंट श्रीमती भारती आशा सहाय चौधरी के परिवार के सदस्यों के कार्यक्रम में शामिल होने पर ख़शी जताते हुए उनका आभार प्रकट किया एवं उन्हें धन्यवाद दिया । मौके पर महाविद्यालय के अन्य सभी आचार्यगन उपस्थित थे। इसके पूर्व बी.एड. प्रथम वर्ष के प्रशिक्षु सोनम कुमारी, नेहा कुमारी एवं ख्याति कुमारी ने नेताजी को नमन करते हुए उनके सम्मान में आजाद हिन्दु राष्ट्र गान प्रस्तुत किया । धीरज कुमार पासवान एवं अमीषा शुक्ल ने इस विषय पर व्याख्यान भी पेश किये । मंच का सञ्चालन बी.एड. प्रशिक्षु अनीता कुमारी एवं ममता कुमारी ने किया ।



School Internship | Practice Teaching

The 16-week school internship for the second year B.Ed. & D.El.Ed. students started on 18-Jan-2023. During their internship the B.Ed. & D.El.Ed. students will complete 60 and 75 lesson plans respectively as mandated by The National Council for Teacher Education (NCTE).

This academic year, school allocations were in coordination with the District Administration. At the request of the Administration, most students have been sent to newly upgraded middle schools in the district.

Assistant Professors from the college have been assigned to each of the 14 schools to oversee the proper conduct of the internship. Prior to the start of the internship, students were given several weeks of pre-internship training that included micro-teaching, lesson plan preparation and teaching aid preparation and use.





वैश्विक भूगोल के बदलते मानक और भारतीय ज्ञान

शोध, अनुभव के आधार पर 'अभिनव सोच' या 'मौलिक चिंतन' की अभिव्यक्ति है, जिसे विभिन्न माध्यमों से प्राप्त, साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित करते हुए, सिद्धांतों एवं नियमों का निर्माण किया जाता है ।



अभी तक हुए शोधों के आधार पर यह सर्वमान्य हो चुका था कि महाद्वीपों की कुल संख्या सात है जो कि यूरोप, एशिया, उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया एवं अंटार्कटिका महाद्वीप हैं । ऐसी ही चर्चा विभिन्न भारतीय धर्मग्रंथों में भी की गई है।

पुराणों और वेदों के अनुसार भी धरती पर सात द्वीप हैं, जो जम्बू, प्लक्ष, शाल्मली, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर हैं । इसी तरह सौरमंडल में भी 9 ग्रहों का उल्लेख मिलता है। '16वीं' शताब्दी में सुरदास जी ने सुरसागर की रचना की, जिसमें ग्रहों के आधार पर ज्योतिष, एवं खगोलशास्त्र से सम्बंधित भारतीय ज्ञान की झलक मिलती है।

इस प्रकार भारत में प्राचीन समय से ही 9 ग्रहों और सात द्वीपों की चर्चा और उसके आधार पर ज्योतिष के क्षेत्र में गणना कार्य होता रहा है । जबकि पश्चिम में प्लूटो को फरवरी 1930 में क्लाइड टॉमबौग (Clyde Tombaugh) के शोध के आधार पर, नौंवा ग्रह माना गया, 24 अगस्त 2006 को अंतर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ द्वारा इसे सौरमंडल से बाहर कर दिया गया, और 2017 में वैज्ञानिकों की एक टीम ने ग्रह की एक नई परिभाषा दी जो प्लूटो को फिर से ग्रह का दुर्जा दे सकती है।

इसी तरह से अब नवीन मानकों एवं तर्कों के आधार पर जीलैंडिया को आठवें महाद्वीप का दुर्ज़ा दिया जा रहा है । भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार जीलैंडिया उन सभी शर्तों को पुरा करता है जो एक महाद्वीप होने के लिए आवश्यक होता है । ये चार शर्तें - एक विशिष्ट भूगर्भिक संरचना, एक निश्चित क्षेत्रफल, समुद्रतल से मोटी भपर्पटी व उसके भ-क्षेत्र का ऊँचा होना हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले कई वर्षों से भू-गर्भ विज्ञानी जीलैंडिया को महाद्वीपों की श्रेणी में रखने हेतु प्रमाण इकट्ठा करने के लिए प्रयासरत हैं और संभव है कि वे सफल भी हो जायें।

यहाँ जो महत्वपूर्ण बात है, वह यह है कि इन विद्वानों द्वारा मानकों को बनाना, उसमें सुधार और परिवर्तन करना, इनके अपने ज्ञान के स्तर पर ही निर्भर करता है । परन्तु भारत में प्राचीन काल से ही ज्योतिष और खगोलशास्त्र के ज्ञान का विशाल भण्डार है, जिसे अब विश्व भी धीरे-धीरे समझ और मान रहा है । नासा (स्थापना-1950) भी तुलसीदास के पृथ्वी और सूर्य के बीच दुरी से सम्बंधित इस चौपाई- 'जुग सहस्र जोजन पर भानू, लिल्योह ताहि मधुर फल जानू' से सहमत है।

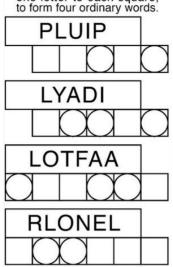
यहाँ नये अध्येताओं के सामने आने वाली समस्या यह है कि अध्ययन करते समय वे किसे सही माने - भारतीय मनीषियों द्वारा स्थापित सिद्धांतों एवं मुल्यों या वर्तमान में विश्व में किये जा रहे नये-नये आविष्कार । प्लेटो के अनुसार ज्ञान कहलाने के लिए तीन आवश्यक शर्तों में से एक शर्त विश्वास है, जिसे विदेशियों द्वारा एक साजिश के तहत भारतीयों में समाप्त किया जा रहा है ।

आवश्यकता इस बात की है कि हम विश्व में हो रहे नये-नये आविष्कारों से अपने देश के अध्येताओं को अवगत करायें और साथ ही अपने देश में पहले से शोधित और प्रमाणित ज्ञान को भी आसानी से सुलभ कराएँ । ज्ञान के द्वंद्व की स्थिति में वर्चस्व के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टिकोंण को विकसित करें और तर्क के आधार पर परखने के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहँचें।

सहायक प्राध्यापक - डॉ. राजवंत सिंह

JUMBLE TIME

Unscramble these Jumbles, one letter to each square, to form four ordinary words.



©2022 Tribune Content Agency, LLC All Rights Reserved

THAT SCRAMBLED WORD GAME By David L. Hoyt and Jeff Knurek



Now arrange the circled letters to form the surprise answer, as suggested by the above cartoon.

IT BECAME - - -



ANSWERS of last volume: DRFYAY - FRYDAY, EBEZER BREEZE. ATHEDE-HEATED. SYALCS-CLASSY

हमारी ऐतिहासिक धरोहर | डॉ. अनंताशुतोश द्विवेदी

28 दिसंबर 2022 को महाविद्यालय सभागार में पटना हेरिटेज सोसाइटी के महानिदेशक डॉ. अनंताशुतोश द्विवेदी का एक विशेष व्यख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. अनंताशुतोश द्विवेदी ने सभागार में मौजूद महाविद्यालय के प्रशिक्षुओं, आचार्यगण एवं संस्थान के अध्यक्ष श्री रणजीत सिन्हा के समक्ष भारतीय इतिहास की विरासतों के संरक्षण पर एक प्रस्तुति पेश की। उन्होंने देश एवं प्रदेश में मौजूद हमारी ऐतिहासिक एवं पौराणिक अभिलेखों, इमारतों एवं दस्तावेजों को संरक्षित, प्रलेखित एवं महामंडित करने की वकालत की। उन्होंने कहा कि हेरिटेज सोसाइटी इसलिए नियमित अन्वेषणों, उत्खनन, प्रकाशनों और कई नवीन विरासत जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से मूर्त और अमूर्त विरासत का दस्तावेजीकरण, संरक्षण और प्रचार करने का प्रयास करती है।

इस मौके पर उन्होंने रोहतास जिले के चौदह ऐसे गांव के बारे में बताया जो मध्यकाल एवं नव-पाषाण काल से ही अस्तित्व में हैं। उन्होंने इसकी सूची भी श्रोताओं से साझा की।

मंच का सञ्चालन सहायक प्राध्यापक श्री शशि कुमार शेखर ने किया, तथा धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के ही सहायक प्राध्यापक डॉ राजवंत सिंह ने किया।







Education is not just a degree

Albert Einstein once said - "It is not so very important for a person to learn facts. For that he does not really need a college. He can learn them from books. The value of an education in a college is not the learning of many facts, but the training of the mind to think something that cannot be learned from textbooks."



To all my fellow students, don't run after accumulating certificates or degrees. Your degree, diploma or certificate may get you your first job. Your knowledge, your attitude, your ability to adapt and your integrity will be the cornerstones of your success and well being. When difficult times call for us to be resilient, our knowledge and skills will come in most useful. So run after the acquisition of skills and enhancement of knowledge.

The best way to learn and enhance skills is through practical training and experiential learning and not by simply memorizing facts and figures.

Since Independence, successive policies on education have placed varying degrees of emphasis on access, on quality and on vocational education, culminating in NEP 2020 which stresses the importance of vocational education in no uncertain terms. It calls for special emphasis on skills training through integration and mainstreaming of vocational education with general education to improve the quality of education.

As we train to become teachers, we will serve our society and country well if we keep Einstein's words in mind.

Pooja Kumari (B.Ed. 2021-23)

क्या आप जानते हैं ?

17वीं सदी में दक्षिण भारत के महान कवि संस्कृत के प्रकांड विद्वान वेंकटाध्वरि ने एक ग्रंथ "राघव यादवीयं" लिखा। यह अपने आप में आश्चर्यजनक एवं अनूठा ग्रंथ है। दुरअसल, इस ग्रंथ को आप सीधा पढ़ते हैं तो रामकथा पढ़ी जाएगी और यदि उल्टा पढ़ते हैं तो कष्ण कथा पढ़ी जाएगी। इस ग्रंथ को अनलोम विलोम काव्य कहा जाता है। इस ग्रंथ में तीस श्लोक हैं लेकिन उल्टे क्रम को मिला दें तो साठ श्लोक बनेंगे।

उदाहरण के तौर पर पहला श्लोक -

वंदेऽहं देवं तं श्रीतं रन्तारं कालं भासा यः। रामो रामाधीराप्यागो लीलामारायोध्ये वासे ॥ १॥

अर्थात,

मैं उन भगवान श्रीराम के चरणों में प्रणाम करता हूँ, जिनके हृदय में सीताजी रहती हैं तथा जिन्होंने अपनी पत्नी सीता के लिए सह्याद्रि पहाड़ियों से होते हुए लंका जाकर रावण का वध किया तथा वनवास पूरा कर अयोध्या वापस लौटे।

अब इस श्लोक का विलोम -

सेवाध्येयो रामालाली गोप्याराधी भारामोराः। यस्साभालंकारं तारं तं श्रीतं वन्देऽहं देवम् ॥ १॥

मैं रूक्मिणी तथा गोपियों के पूज्य भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में प्रणाम करता हूँ, जो सदा ही माँ लक्ष्मी के साथ विराजमान हैं तथा जिनकी शोभा समस्त जवाहरातों की शोभा हर लेती है॥

सहायक प्राध्यापक एवं युवा कवि - जगमोहन चौधरी

National Education Policy 2020

The National Education Policy 2020 is the first education policy of the 21st century and aims to address the many different perspectives on education in our country.

This policy proposes the revision and revamping of all aspects of the education structure including its regulation and governance to create a new system that is aligned with the aspirational goals of 21st century education.

A major change in the NEP 2020 is the structure of school education from the present 10+2+3 to 5+3+3+4. It is for the first time that education policy makers have focused on the education of children between the ages of theree and six. They have called it Early Childhood Care & Education (ECCE).

For the reconstruction of ECCE NCTE has created a framework (NCPF - ECCE National Curricular and Pedagogical framework) to ensure quality ECCE and its inclusion in the teacher education programs.

Students will be given increased flexibility and choice of subjects to study, particularly in secondary school including subjects in physical education, the arts and crafts, and vocational skills so that they can design their own paths of study and life plans. Holistic development and a wide choice of subjects and courses year to year will be the new distinguishing feature of secondary school education.

NEP 2020 calls for financial support to students in the socio-economically disadvantaged groups (SEDGS). It also aims to overcome social biases associated with vocational education by bringing vocational education programs into mainstream educational institutes in a phased manner.

G. Vikaskar (D.El.Ed. 2021-23)

Saraswati Puja Celebration



UPCOMING EVENTS

February 2023

12th February 2023: International Darwin's Day.

March 2023

4th March 2023: Holi celebration

21st March 2023: International Women's Day

A publication of Amaltas College of Education (for internal circulation only)





